बाइबल टीचर

वर्ष 17 जनवरी 2020 अंक 2

सम्पादकीय

प्रभु भोज लेने से पहिले अपने आपको जांच लें

प्रभु भोज एक ऐसी यादगारी है जो प्रत्येक मसीही के लिये बहुत महत्व रखती है। यीशु ने प्रभु भोज की स्थापना की थी। (मत्ती 26:26-28) बाइबल में हम पढ़ते हैं कि यीशु ने रोटी ली और धन्यवाद देकर तोड़ी और कहा कि यह मेरी देह है मेरी यादगारी में इस रोटी को खाना तथा फिर उसने कटोरा लिया जिसमें अंगूर का रस था जिसके द्वारा उसने कहा था कि मेरे लोहू को याद करने के लिये इस शीरे को पीना। (1 कुरि. 11:23-26)।

सप्ताह के पहिले दिन यानि सन्डे को मसीही लोग इसमें भाग लेते हैं। (प्रेरितों 20:7)। इसमें भाग लेने के लिये प्रत्येक मसीही बड़ा उत्साहित होता है तथा सच्चा मसीही अपना पूरा प्रयास करता है ताकि प्रभु भोज को मिस न करे।

अपने इस पाठ में हम यह देखना चाहेगें कि प्रभु भोज लेने से पहिले प्रत्येक मसीही को अपने आपको जांचने की आवश्यकता है। प्रेरित पौलुस ने कहा था, "इसलिये मनुष्य आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खायें और इस कटोरे में से पिये। क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है।" (1 कुरि 11:28-29)। यदि कोई मसीही प्रभु भोज लेते समय अपने को जांचता नहीं है तो वह अपने ऊपर दण्ड लाता है।

प्रभु भोज का समय एक ऐसा समय होता है जब हम अपनी गलत बातों से मन फिरा सकते हैं। यदि हमारे जीवन में बुराईयां हैं या हमारी किसी मसीही भाई बहन से अनबन हो गई है तब प्रभु भोज लेने से पहिले हम उन्हें माफ कर सकते हैं। अफ्रीका देश में एक मसीह की कलीसिया है जहां प्रभु भोज लेने से पहिले थोड़े समय तक लोग अपने को जांचते हैं यह देखने के लिये कि मेरे मन में क्या बुराई है या मेरी किसी के विरूद्ध कोई शिकायत है तो वे उसी समय अपना मन फिरा लेते हैं।

कई बार हम प्रभु भोज के विषय में कुछ बताते नहीं है तथा प्रार्थना करके जल्दी से उसे बांट देते हैं। यदि कलीसिया को यीशु की मृत्यु के विषय में तथा यादगारी के विषय में बताया जाये तो कितना अच्छा होगा और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दो तीन मिनट के लिये हम गंभीरता से अपने को जांच लें और तब इसमें भाग ले तो बहुत अच्छी बात होगी। अपने मन को जांचना बहुत आवश्यक है। हो सकता है कई मसीही

जिनके मनों में बुराई भरी हुई है या किसी के मन में किसी अन्य भाई के प्रति कोई मनमुटाव है वो मन फिराकर दूर हो जाये।

प्रभु भोज लेने से पहिले यह भी बताना अच्छा होता है कि उसे हम क्यों ले रहे हैं तथा यह केवल मसीहीयों के लिये है। कई बार आराधना में ऐसे लोग भी उपस्थित होते हैं जो मसीही नहीं है इसलिये यह आवश्यक होता है कि बताया जाये कि यह मसीही लोगों के लिये एक यादगारी है।

बाइबल हमें बताती है कि अनुचित तरह से इसमें भाग लेने से हम अपने ऊपर दण्ड लाते हैं। कई स्थानों पर प्रभु भोज के विषय में कुछ नहीं बताया जाता तथा जल्दबाजी में रोटी और शीरे के लिये धन्यवाद देकर एकदम बांट दिया जाता है। कई लोग बिना सोचे समझे इसमें भाग लेते हैं। इसे अनुचित तरीका कहा जाता है क्योंकि कई लोग अंजान होते हैं कि वे क्या कर रहे हैं?

मसीही प्रचारकों को प्रेरित पौलुस द्वारा दी गई बातों को जो प्रभु भोज के विषय में 1 कुरि. 11 अध्याय में दी गई है पढ़ना और समझना चाहिए तथा कलीसिया को बताना चाहिए कि वास्तव में प्रभु भोज क्या है तथा हमें इसे कितना महत्व देना चाहिए? पूरी कलीसिया को यह जानना चाहिए कि प्रभु भोज अपने आप को जांचने का समय है। कई बार लोग दूसरों को जांचने लगते हैं जबकि बाइबल कहती है कि हम अपने आपको जांच लें और तब इसमें भाग लें। यदि आप एक मसीही हैं तो याद रखिये प्रभु भोज बुराइयों से मन फिराने का उचित समय है।

मूढ़ता की मृत्यु

सनी डेविड

संसार की किसी भी भाषा में "मृत्यु" एक बड़ा शोकजनक शब्द है। दूसरी ओर, मृत्यु एक ऐसी सर्वव्यापी वास्तविकता है, जिसे संसार के सभी लोग बिना किसी तर्क के स्वीकार करते है। मृत्यु के ऊपर हम दो तरह से विचार कर सकते है, अर्थात कुछ लोग मूढ़ता की मृत्यु मरते हैं और कुछ लोग बुद्धिमानी की मृत्यु प्राप्त करते हैं। मूढ़ता की मृत्यु के विषय में, पवित्र बाइबल का एक लेखक यूं कहता है, "मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हों परन्तु यदि वे समझ नहीं रखते, तो वे पशुओं के समान है जो मर मिटते हैं।" (भजन 49:20)। अर्थात वे बिना किसी उद्देश्य के और बिना किसी आशा के मर मिटते हैं।

दूसरी ओर, बुद्धिमानी की मृत्यु में एक उद्देश्य होता है, एक आशा होती है। उदाहरण स्वरूप, जब यीशु की मृत्यु हुई तो उस अवसर पर देखने वालों ने जो कुछ भी देखा, उन्हीं ने देखकर कहा, "सचमुच" यह परमेश्वर का पुत्र था।" (मत्ती 27: 54)। उसकी मृत्यु में एक उद्देश्य था। अपनी मृत्यु से पूर्व, उसने घोषित करके कहा था, "कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है.... और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर

चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूगा।" (यूहन्ना 12:24, 32)। ऐसा कहकर न केवल उसने इसी बात को प्रकट किया कि वह किस प्रकार की मृत्यु पाएगा, परन्तु उसने यह भी बताया कि उसकी मृत्यु अनेकों लोगों के लिये जीवन का कारण बनेगी। उसकी मृत्यु में एक कारण था। पवित्र बाइबल कहती है, "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं; उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।" (1 पतरस 2:24)। यीशु की मृत्यु, वास्तव में एक उद्देश्यपूर्ण और आशापूर्ण मृत्यु थी।

फिर, हम स्तिफनुस नाम के एक व्यक्ति की मृत्यु के बारे में भी पढ़ते है। जिस परिस्थिति में स्तिफनुस की मृत्यु हुई वइ इस प्रकार थी, जब वह लोगों के एक झुण्ड को उद्धारकर्ता यीशु के बारे में बता रहा था, तो लोगों ने उसकी बातों को पसंद नहीं किया; वे उसके विरोध में उठ खड़े हुए और उसे पत्थरवाह करके मार डाला। इस घटना का वर्णन करके लेखक यूं बताता है, "और वे स्तिफनुस को पत्थरवाह करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा; कि हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर। फिर घुटने टेककर ऊंचे शब्द से पुकारा, हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा, और यह कहकर सो गया।" (प्रेरितों 7:59, 60)। कितनी सुन्दर थी स्तिफनुस की मृत्यु। वह एक उद्देश्य के लिये मरा। उसे मृत्यु में एक आशा दीख पड़ती थी।

अपनी सेवा के अंत में, जब प्रेरित पौलुस ने जान लिया कि अब उसकी मृत्यु निकट है, तो उसने अपने एक साथी को पत्र लिखकर यूं कहा, "अब मैं अर्ध की नाई उन्डेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट हुआ है, जिसे प्रभु जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं, वरन उन सब को भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।" (2 तीमुथियुस 4:6-8)। पौलुस की मृत्यु में एक आशा थी, क्योंकि उसने अपना उद्देश्य लिया था। उसके लिये मृत्यु एक शोकपूर्ण अन्त नहीं परन्तु एक आनन्दमय जीवन का आरंभ था। वह एक बुद्धिमान मनुष्य की तरह मरा।

परन्तु जबकि बाइबल में हम इस प्रकार से सुन्दर तथा बुद्धिमानी से मरने वाले लोगों के बारे में पढ़ते हैं, दूसरी ओर, हमें कुछ ऐसे लोगों के बारे में भी मिलता है जो एक मूढ़ व्यक्ति की नाई मरे। ऐसे लोगों के ऊपर विचार करते हुए सबसे पहिले मेरा ध्यान अब्नेर की ओर जाता है। अब्नेर शाऊल राजा का प्रधान सेनापति था परन्तु वह एक मूढ़ की नाई मरा। प्राचीन कनान देश में छः शरणनगरों को ठहराया गया था। इन शरणनगरों को इसलिये ठहराया गया था कि देश में जो कोई किसी को भूल से मारके खूनी ठहरे तो वहां भाग जाए और शरणनगर में रहते हुए उसकी कोई हानि नहीं कर सकता था। सो ऐसा हुआ कि एक दिन अब्नेर ने अपनी सुरक्षा के हित में असाहेल नाम एक व्यक्ति को मार डाला। (2 शमूएल 2:23)। तत्पश्चात वह पास के शरणनगर की ओर भाग गया। जब वह नगर के द्वार पर आया तो उसने सोचा कि कदाचित अब वह पूर्ण सुरक्षित है। परन्तु योआब, असाहेल का भाई, अब्नेर का पीछा करता हुआ आया, और उससे बड़ी ही नम्रता से बातचीत करके वह उसे एकान्त में अलग ले गया और उसे धोखा देकर मार डाला। वह सुरक्षा के पास तो था परन्तु उसके भीतर नहीं था, वह

बहुत ही निकट था, परन्तु तौभी बड़ी दूर था। कितने ही लोग आज भी ठीक इसी परिस्थिति में है। दाऊद जो कि वहां का नया राजा बना, अब्नेर की कब्र तक उसके शव के पीछे-पीछे यूं विलाप करता चल रहा था, "क्या उचित था कि अब्नेर मूढ़ की नाई मरे?" (2 शमूएल 3:33)।

आज हमारे समय में भी अनेकों लोग इसी तरह के हैं जिनकी मृत्यु एक मूढ़ की नाई होगी, क्योंकि वे अंधकार के राज्य की सीमा को लांघकर ज्योति के राज्य के भीतर प्रवेश करने के महत्व को पहिचानने में असफल रह जाते हैं। बहुतेरे कदाचित उसके पास हो, शायद बिल्कुल ही निकट हो, परन्तु सुरक्षा फाटक पर ही नहीं उसके भीतर है। मनुष्य पापी है और वह परमेश्वर की महिमा से रहित और अनन्त -मृत्यु दण्ड का भागी है। परन्तु परमेश्वर ने मनुष्य के लिये अनन्त मृत्यु दण्ड से बच निकलने के लिये एक शरण-स्थान बनाया है, और हमारा वह शरण स्थान है यीशु मसीह। इसलिये लिखा है, "सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।" (रोमियों 8:1)। प्रश्न यह नहीं है कि आप उसके कितने निकट है, परन्तु प्रश्न यह है कि क्या आप उसके भीतर है? क्योंकि उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं जो मसीह यीशु में है। परन्तु मैं कैसे मसीह में हो सकता हूं? पवित्र पुस्तक का लेखक कहता है, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।" (गलतियों 3:26, 27)। इसके अतिरिक्त मसीह के भीतर होने का और कोई अन्य मार्ग नहीं है।

फिर हम बाइबल के पुराने नियम में नादाब और अबीहू नाम के दो भाईयों के बारे में पढ़ते हैं। ये दोनों व्यवस्था के अनुसार परमेश्वर के याजक थे। परन्तु जिस परिस्थिति में उन दोनों की मृत्यु हुई उसे दृष्टिकोण में रखकर हम दाऊद की तरह उनके विषय में यूं कह सकते हैं क्या उचित था कि नादाब और अबीहु मूर्ख की नाई मरें? क्योंकि वे दोनों याजक थे, इसलिये उनका कर्तव्य था कि व्यवस्था की रीति अनुसार वे यहोवा के सम्मुख आरती दें। सो हम देखते हैं, "तब नाबाद और अबीहु नामक हारुन के दो पुत्रों ने अपना-अपना धूपदान लिया, और उन में आग भरी, और उसमें धूप डालकर उस ऊपरी आग की जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख आरती दी। तब यहोवा के सम्मुख से आग ने निकलकर उन दोनों को भस्म कर दिया और वे यहोवा के सामने मर गए।" (लैव्यव्यवस्था 10:1, 2) वास्तव में जिस आग की आज्ञा इस काम के लिये परमेश्वर ने दी थी वह वेदी के ऊपर से होनी चाहिए थी (लैव्य. 16:12)। परन्तु, प्रत्यक्ष ही है, कि नादाब और अबीहू का तर्क यह था, कि आग तो आग ही है सो क्यों नहीं कहीं से भी ले ली जाए। वे इस बात को देखने में असफल रहे कि परमेश्वर की किसी भी आज्ञा में किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं लाया जा सकता। जबकि उस ने हमें विशेष रूप से कोई काम करने के लिये आज्ञा दी है, तो हमें कोई अधिकार नहीं कि हम उसके ऊपर अपने दृष्टिकोण से विचार करें या उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करें।

यह ठीक है, कि हम आज नादाब और अबीहू की तरह पुराने नियम की व्यवस्था के भीतर नहीं रह रहे हैं, तौभी जैसे कि प्रेरित पौलुस एक जगह कहता है कि "जितनी

बातें पहिले से लिखी गई, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गई है।" (रोमियों 15:4)। इसलिये नादाब और अबीहू की घटना हमारे लिये एक बहुत बड़ा दृष्टान्त है, वह हमारे लिये एक बहुत बड़ी शिक्षा है। अर्थात जब परमेश्वर हमें कुछ करने की आज्ञा देता है तो हम उस कार्य को ठीक उसी ढंग से करें जैसे कि वह चाहता है, न तो हम उसमें कुछ घटाएं, ना बढ़ाएं और न कोई बदलाव लाएं। यद्यपि ऐसा करने में हमें कोई हानि या कुछ अनुचित प्रतीत न हो, तौभी हमें केवल वही करना चाहिए जो वह आज्ञा देता है। सो जब परमेश्वर कहता है, कि हम यीशु मसीह को उद्धारकर्ता मानकर उसमें विश्वास करें, तो हमें ऐसा ही करना चाहिए। जब वह कहता है, कि हम अपने पापों से मन-फिराएं तो हमें ऐसा ही करना चाहिए। और जब वह कहता है, कि हमें पापों की क्षमा के लिये, अर्थात मसीह को पहिन लेने के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए, तो हमें ऐसा ही करना चाहिए। (यूहन्ना 3:16; प्रेरितों 17:30; प्रेरितों 2:38 तथा गलतियों 3:27)।

क्या आवश्यकता है कि मनुष्य एक मूढ़ की नाई मरे जबकि वह मसीह यीशु में होकर, पापों से मुक्त होकर एक बुद्धिमान की नाई कर सकता है? क्या आप उस समय यूं कह सकेंगे, "मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।" (2 तीमुथियुस 4:6-8)।

मित्रो, मेरा विश्वास है कि आप इन बातों को व्यर्थ जानकर टाल न देंगे, परन्तु आप इन पर पूरी गंभीरता से विचार करेंगे। प्रभु अपनी इच्छा पर चलने के लिये आपको समझ दे।

परमेश्वर के लोगों में एकता

जे. सी. चोट

मसीही लोग परमेश्वर की संतान है। वह चाहता है कि उसके लोग आपस में मिलाकर रहें। उसके लोग संसारिक लोगों के लिये एक उदाहरण हैं क्योंकि वे आपस में मिलकर रहते हैं। उसके लोग शांतिप्रिय हैं इसलिये वे पूरा प्रयत्न करते हैं कि कलीसिया में किसी प्रकार से कोई लड़ाई-झगड़ा न हो। वे एक दूसरे की सह लेते हैं। बाइबल की बातों को मानकर सारे सदस्य शांति बनाएं रखते हैं। प्रेरित पौलुस कहता है, "सो मैं जो प्रभु में बंधुआ हूं तुम से बिनती करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे उसके योग्य चाल चलो। अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो।" कलीसिया में जब कोई किसी बात को लेकर विवाद खड़ा हो जाता है तब सदस्यों को मसीह जैसा स्वभाव रखकर एक दूसरे को सह लेना चाहिए और यदि हम ऐसा नहीं करते तो आपस में

मतभेद के कारण कुछ लोग कलीसिया को छोड़कर चले जाते हैं। यीशु ने कहा था, तुम जगत की ज्योति हो और परमेश्वर को आप से बहुत आशायें है।

जब कलीसिया में फूट होती है उससे परमेश्वर अप्रसन्न होता है। नीतिवचन का लेखक कहता है, "छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है वरन सात है जिनसे उसको घृणा है अर्थात घमण्ड से चढ़ी हुई आंखें, झूठ बोलने वाली जीभ और निर्दोष का लोहू बहाने वाले हाथ, अनर्थ कल्पना गड़नेवाला मन और बुराई करने को वेग दौड़ने वाले पांव, झूठ बोलने वाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करने वाला मनुष्य।" (नीतिवचन 6:16-19)। यदि आपके कारण कलीसिया में झगड़ा हुआ है तब परमेश्वर इस बात से बहुत अप्रसन्न है। यीशु ने कहा था, "जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है वह बना न रहेगा। (मत्ती 12:25)। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कलीसिया में किस बात के कारण फूट हो रही है? पौलुस ने कहा था, "हे भाइयों मैं तुमसे बिनती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उनसे दूर रहो" (रोमियों 16:17)।

यदि कलीसिया में हमारे अपने व्यावहार से कोई समस्या हो रही है तो ध्यान रखिये। यदि हमारे अनुचित व्यावहार से किसी मसीही भाई को चोट पहुंचती है तो परमेश्वर की दृष्टि में हम इसके जिम्मेदार होंगे। कलीसिया में जो लोग प्रचार करते है उन्हें भी अपनी पूरी चौकसी करनी चाहिए। हमेशा यीशु के व्यावहार को याद रखें। ध्यान दीजिये कि यदि यीशु मेरे स्थान पर होता तो वह कैसा व्यावहार करता? यीशु यह चाहता है कि उसके लोग प्रेमपूर्वक एक साथ मिलकर रहें और बाइबल कहती है कि "जो भाई निर्बल है, उसे अपनी संगति में ले लो, परन्तु उसकी शंकाओं पर विवाद करने के लिये नहीं।" (रोमियों 14:1)। "या फिर तू अपने भाई पर दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है?" वो कहता है "हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे। (आयत 14:10)। सो हम में हर एक परमेश्वर को अपना लेखा देगा" (14:12)।

फिर पौलुस कहता है कि, "सो आगे को हम एक दूसरे पर दोष न लगायें पर तुम यह ठान लो कि कोई अपने भाई के सामने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे।" इसलिये हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो" (रोमियों 14:13 तथा 19)।

हम देखते हैं कि कुरिन्थ की कलीसिया में कई बातों पर वाद-विवाद हो रहा था तथा पौलुस को उनसे यह बात कहनी पड़ी, "हे भाइयों मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो" (1 कुरि. 1:10)। मसीहीयों को आपस में मिलकर रहना बहुत आवश्यक है।

जब यीशु इस पृथ्वी पर था उसने अपने लोगों की एकता के लिये प्रार्थना की थी। उसने उनके लिये इस प्रकार से प्रार्थना की थी, "मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे कि वे सब एक हो। जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हो,

इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा है।" (यूहन्ना 17:20-21)। यीशु ने अपने लोगों के लिये प्रार्थना की थी कि वे एक हो आज प्रत्येक मसीह की कलीसिया में यीशु एकता चाहता है। क्या हम सब मसीह में एक हैं? याद रखिये परमेश्वर उनसे घृणा करता है जो भाईयों के बीच झगड़ा उत्पन्न करने का कारण बनते हैं। जिसके कारण अर्थात जिस बात के कारण झगड़े फसाद होते हैं उसे हमें दूर कर देना चाहिए। वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाए। देखा जाता है कि लोग मसीह में आगे न बढ़कर छोटी-छोटी बातों में उलझे रहते है और न तो खुद मसीह में बढ़ते है और न दूसरे भाइयों को आगे बढ़ने देते हैं। यदि हम मसीह में बढ़ नहीं रहे तब हम यीशु की उस प्रार्थना को भूल जाते हैं जो उसने अपने लोगों के लिये की थी कि "वे सब एक हो।"

आज आप मसीह की कलीसिया के एक सदस्य होते हुए, क्या यह मानते कि प्रभु यीशु आपका एक आदर्श है। उसने अपने लोगों को प्रेम का पाठ सिखाया। प्रेरित कहता है, "इसलिये प्रिय बालकों की नाई परमेश्वर के सदृश्य बनो। और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगंध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया।" (इफिसियों 5:1-2)। यदि हम चाहते हैं कि कलीसिया में सब मिलकर एकता के साथ रहें तो प्रेरित पौलुस के इन शब्दों को हमेशा याद रखें जब उसने मसीहीयों से कहा था, "सो यदि मसीह में कुछ शांति और प्रेम से ढाढ़स और आत्मा की सहभागिता और कुछ करूणा और दया है तो मेरा यह आनंद पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम एक ही चित और एक ही मनसा रखो। विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो। पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो" (फिलिप्पियों 2:1-3)। एकता का यह सबसे अच्छा फार्मूला है कि अपने से दूसरों को अच्छा समझना।

उपासना सभाओं में आपकी अनुपस्थिति का परिणाम

जॉन स्टेसी

यदि आप एक मसीही हैं और कलीसिया की उपासना सभाओं में नियमित रूप से नहीं आते हैं, तो ऐसा क्यों हैं? क्या आप बाइबल से भली-भांति परिचित है? यदि हाँ, तो आप को तो अन्य लोगों को सिखानेवाला हो जाना चाहिए। यदि आप उपासना सभाओं में अनुपस्थित होते हैं तो क्या इसका कारण यह है कि आप शिक्षा देनेवाले को ठीक से नहीं समझ पाते? यदि यह बात आप उस शिक्षक को बताएं तो वह अवश्य ही आप के लाभ के लिये कुछ परिवर्तन लाएगा। वा क्या उपासना का समय आपको कुछ जल्दी या देर से लगता है? बहुतेरे लोग जो यहां इन बातों को पढ़ेंगे वे जानते हैं कि वे अपने-अपने कामों पर, जहां से उन्हें पैसे मिलते हैं, ठीक समय पर, चाहे कोई सा भी समय हो, पहुंचते हैं। या क्या आपकी अनुपस्थिति का कारण यह है, कि आप पृथ्वी पर परमेश्वर के लोगों के साथ एकत्रित होने के महत्व को नहीं पहिचानते? पर यदि

आपको परमेश्वर के लोगों के साथ एकत्रित होने से अभी कोई आनन्द नहीं मिलता, तो निश्चय ही स्वर्ग में भी आप को इस बात से कोई आनन्द नहीं मिलेगा।

क्या आप जानते हैं कि यीशु ने, मत्ती 18:20 में, कहा था कि "जहां दो या तीन मेरे नाम पर इक्ट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।" क्या आप वहां नहीं होना चाहते जहां यीशु होता है? शायद आप कहते हैं, कि आप को कभी-कभी आराम की जरुरत है और इस कारण आप हमेशा सभाओं में नहीं आ सकते। परन्तु इस जीवन के बाद आराम करने का आप को बहुत अवसर मिलेगा। आपको अभी प्रभु के कामों को करने की आवश्यकता है। यूहन्ना 9:4 के अनुसार, यीशु ने कहा था, "जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है: वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता।"

क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है, कि एतवार ही के दिन मसीही लोग अन्य लोगों की तरह सिनेमा देखने जा सकते है और पिकनिक इत्यादि के लिये जा सकते है, और सारा दिन ऐसे-ऐसे कामों में बिता सकते हैं, पर आराधना के लिये उनके पास समय नहीं है? यदि आज कलीसिया में ऐसे लोग हैं तो फिर मसीह के सुसमाचार का क्या होगा? सारे संसार के लोग प्रभु के सुसमाचार को कैसे सुन पाएंगे। क्योंकि जो उसकी आराधना ही नहीं नियमित रूप से करते वे किस प्रकार उसके कामों को करेंगे?

बात यह है, कि कई लोग जो उपासना में आते हैं, उनका एक पैर तो भीतर रहता है और एक आंख घड़ी पर रहती है, और उन्हें प्रतिक्षा रहती है कि कब सरमन ख़त्म हो और दुआ हो और आमीन कहा जाए और वे वहां से भागें। और फिर यही लोग बाद में कहते हैं कि कलीसिया में लोग आपस में प्रेम नहीं रखते।

कुछ ही समय पूर्व मैंने एक जगह एक मसीही और एक गैर-मसीही व्यक्ति के बीच वार्तालाप के बारे में पढ़ा था। गैर-मसीही व्यक्ति ने मसीही व्यक्ति से पूछा था कि "क्या नाचना उचित है?" मसीही व्यक्ति का जवाब था कि, "मैं नहीं समझता कि एक मसीही कभी भी नाचना चाहेगा।" सो क्या एक मसीही व्यक्ति के लिए कलीसिया की उपासना सभाओं में न आना उचित है? हमारा जवाब है, हम ऐसा सोच भी नहीं सकते कि एक मसीही कभी भी जानबूझकर उपासना सभा में अनुपस्थित होगा।

किन्तु आपकी अनुपस्थिति का परिणाम क्या होगा? सर्व प्रथम, आपका मन मसीह यीशु और उसके वचन पर नहीं है। यीशु ने, मत्ती 22:37, में कहा था, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन.... के साथ प्रेम रख।" हमें अपने सारे मन से परमेश्वर के साथ प्रेम रखना चाहिए। परमेश्वर का वचन हमारे मनों में होना चाहिए, क्योंकि कलीसिया का मुख्य उद्देश्य ही अन्य लोगों को शिक्षा देना है। हम इफिसियों 3:10-11 में पढ़ते हैं, "ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर स्वर्गीय स्थानों में हैं, प्रकट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी।"

दूसरे, यदि आप नियमित उपस्थित नहीं होगें तो जो लोग कलीसिया के सदस्य नहीं है वे आप के बारे में अच्छा विचार नहीं रखेंगे। कई बार मन्डलियों में ऐसे लोग आते हैं जो मन्डली के सदस्य तो नहीं होते पर वे सभाओं में मन्डली के सदस्यों से भी अधिक उपस्थित रहते है तथा समय पर पहुंच जाते हैं। 1 कुरिन्थियों 10:32 में पौलुस

लिखकर कहता है कि "तुम न तो यहूदियों न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिए ठोकर का कारण बनो।" क्या आज कितने ऐसे मसीही नहीं हैं जो गैर-मसीहीयों के लिये ठोकर का कारण बनते हैं?

तीसरे, आपकी अनुपस्थिति से विश्वासी सदस्यों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता। विश्वासी मसीही जानते हैं कि इब्रानियों 10:25 में लिखा है "और एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना न छोड़े, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक-दूसरे को समझाते रहें: और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो।" जब कलीसिया में परमेश्वर का सारा परिवार उसकी उपासना करने के लिये एकत्रित होता है, तो यह बड़े ही आनन्द की बात होती है।

फिर, उपासना में न आकर आप अपनी आत्मा के साथ एक खतरनाक खेल खेलते है। जब आप उपासना में न आकर किसी अन्य मनोरंजन के स्थान पर होते हैं, और यदि यीशु उसी समय वापस आ जाए, तो क्या होगा? यीशु ने मत्ती 24:44 में कहा था कि, "....जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।" फिर इस बात पर भी गौर करें कि उपासना में न आकर आप अपनी आत्मा को आत्मिक भोजन से वंचित रखते हैं। मत्ती 4:4 के अनुसार, "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।"

अंत में हम पतरस के उन शब्दों पर ध्यान देंगे जिन्हें उसने उन मसीहियों को लिखा था जो विश्वास से भटक गए थे। उसने कहा था, "क्योंकि धर्म के मार्ग का न जानना ही उनके लिये इससे भला होता, कि उसे जानकर, उस पवित्र आशा से फिर जाते, जो उन्हें सौंपी गई थी।" (2 पतरस 2:21)।

सही प्रचार करने के लिए बड़ी लगन के साथ बाइबल अध्ययन करने की आवश्यकता है

परमेश्वर ने आरंभ में भविष्यवक्ताओं तथा प्रेरितों को, अपनी इच्छा को मानवता पर व्यक्त करने के लिये इस्तेमाल किया था। वे पवित्रात्मा की ओर से लिखते और बोलते थे। (इफि. 5:3-5; यूहन्ना 14:26 तथा 16:13; 1 कुरि. 2:13)। जो भी पवित्र-शास्त्र में हमारे पास आज लिखा हुआ है, उस सब सत्य को लिखने के लिये पवित्रात्मा ने उनकी अगुवाई की थी। (यू. 16:13; 2 तीमु. 3:16-17; गल. 1:8-9; प्रका. 22:18-19) बाकी सब लोगों को, प्रचारकों समेत, उन्हीं बातों को पढ़ने की जरूरत है जिन्हें उन्होंने लिखा था। (इफि. 3:4-5)। यहूदा 1:3 में बल देकर सब मसीहीयों से कहा गया है, कि उस विश्वास की सारे यत्न से रखवाली करें जो उन्हें "एक ही बार सौंपा गया था।" इस से यह बात साफ हो जाती है कि क्यों प्रचारकों को अध्ययन करने की आवश्यकता है। पौलुस ने नौजवान प्रचारक तीमुथियुस से कहा था, "अपने आपको परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।" (2 तीमु. 2 :15)। प्रचारक को परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से काम में लाने के

लिये बाइबल पढ़ने की आवश्यकता है। ठीक रीति से काम में लाने का अर्थ यह बताता है कि उसे गलत तरह से भी उपयोग किया जा सकता है। जो व्यक्ति परमेश्वर के वचन को पढ़ने में समय व्यतीत नहीं करना चाहता, यत्न के साथ अध्ययन नहीं करना चाहता, उसे प्रचार करना नहीं चाहिए। परमेश्वर के आत्माओं को बचाने वाले संदेश की पूरी गंभीरता के साथ जानकर ही प्रचार करना चाहिए, ताकि सुनने वाले उसे भली प्रकार समझ सकें।

परमेश्वर के वचन को सही ढंग से इस्तेमाल में लाने के लिये इन नियमों का पालन करना आवश्यक है: जो कहा गया उसे कब कहा गया था, किसने कहा था और किससे कहा था। ऐसे ही कुछ अन्य नियमों का पालन करना भी आवश्यक है। बहुतेरे प्रचारक इस बात में अंतर को नहीं समझते कि पुराना नियम इस्राएली लोगों के लिये था, और नया नियम मसीह का वह नियम है जो उसकी मृत्यु के बाद से सभी लोगों के लिये है। (इब्रा. 7:12; 10:9-10)। इसलिये वे मसीही आराधना में यहूदियों की अराधना की रीतियों को मिला देते हैं। अन्य कुछ इस बात को नहीं देखते कि वह बात किस से कहीं गई थी। और इस कारण, जो बातें मसीही लोगों को लिखी गई थी उन्हीं का हवाला देकर अन्य लोगों को बताते हैं। कि उन्हें मसीही बनने के लिये क्या करना चाहिए। यहां हम विस्तारपूर्वक यह नहीं देखने का यत्न कर रहे हैं कि अध्ययन किस प्रकार करना चाहिए, पर हम सत्य को जानने के लिये अध्ययन करने के महत्व को देख रहे हैं, ताकि अन्य लोगों को ठीक तरह से सिखा सकें। इसलिये, सही तरह से सच्चाई सिखाने के लिये ठीक से अध्ययन करें। केवल सत्य ही मनुष्य को स्वतंत्र कर सकता है। (यू. 8:32)।

हमें ऐसे संदेश बनाकर प्रचार करने चाहिए जिन्हें सुनकर लोग लाभ उठा सकें

कुछ प्रचारक बाइबल की कहानियां सुनाते हैं, या अपने अनुभवों को बताते हैं, और अच्छे लाभ पहुंचाने वाले संदेश तैयार नहीं करते। बाइबल की कहानियों का इस्तेमाल करना या किसी बात को सिखाने के लिये अच्छे उदाहरणों का इस्तेमाल करना अच्छी बात है। प्रभु यीशु भी दृष्टान्तों और कहानियों को उपयोग में लाता था। फिर भी, याद रखें कि हम बोलकर लोगों का मनोरंजन नहीं कर रहे हैं। यह बात अवश्य याद रखें। हम परमेश्वर के दास हैं, और इसलिये उसी के संदेश को लोगों तक पहुंचाना हमारा कर्त्तव्य है। अच्छी तरह से पेश करें ताकि लोग सुनते-सुनते सो न जाएं। एक बार एक प्रचारक प्रचार कर रहा था। उसने देखा कि एक आदमी सो रहा है। सो उसने उसके पास बैठे एक लड़के से कहा कि वह "उसे जगा दे।" पर लड़के ने प्रचारक से कहा कि आप जगाओ, क्योंकि आप ही ने तो उसे सुलाया हैं। अपना संदेश ऐसा बनाएं कि सुनने वाले लाभान्वित हो सकें।

किसी भी सभा में बोलने के लिये ऐसा संदेश बनाएं कि उपस्थित लोगों को उससे लाभ मिल सके। परमेश्वर के वचन को खराई के साथ सुनाएं। ताकि सुनने वाले उन बातों को सुनें जिन्हें जानने की उन्हें ज़रूरत है। ताकि वे उन बातों को सुनकर और मानकर परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले बन सकें।

ध्यान दें कि जो लोग सुनने आएं हैं उन्हें क्या सुनने की जरूरत है। कुछ लोग

पहली बार सुनने वाले हो सकते हैं, जिन्हें परमेश्वर की उद्धार की योजना को सुनने की आवश्यकता है। कुछ को यह जानने की आवश्यकता हो सकती है कि मसीह ने उनके लिये क्या किया है, और उन्हें मुक्ति पाने के लिये क्या करना चाहिए। कुछ यह जानना चाहते हों कि मसीह की कलीसिया और मनुष्यों के बनाए सम्प्रदायों में क्या अन्तर है। कुछ की आवश्यकता मसीही जीवन के बारे में जानने की हो सकती है। सो यह जानना बड़ा ही जरूरी है कि हम किन लोगों को प्रचार कर रहे हैं, और फिर वैसा ही प्रवचन तैयार करें।

सरल, समझ में आने वाली और सुनने में भली लगने वाली भाषा को इस्तेमाल में लाएं

यह न भूलें, कि आप लोगों को परमेश्वर के वचन की सच्ची बातें बताने जा रहे हैं। इस प्रकार बोलें कि आपकी आवाज सब तक पहुंच सके। ऐसे बड़े-बड़े शब्दों को उपयोग में न लाएं जिन्हें लोग समझ न सके। याद रखें कि आप एक अच्छा संदेश या सुसमाचार सुना रहे हैं। यदि आप अनुचित चाल-चलन या गलत शिक्षाओं के बारे में बोल रहे हैं, तो सच्चाई का बयान प्रेम के साथ करें, और धीरज के साथ करें। (इफि. 4:15; 2 तीमु. 4:2)। परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं मनुष्यों को आशा और उत्साह देती है। सो इसी प्रकार से बोलें।

प्रचारकों को चाहिए कि अपने मनों को परमेश्वर के वचन के ज्ञान से भरपूर कर लें, ताकि सत्य का प्रचार प्रभाव-सहित करें

आज के युग में अनेकों प्रकार की साम्प्रदाकि शिक्षाएं प्रचलित हैं। इसलिए यह बड़ा ही जरूरी है कि बाइबल की शिक्षाओं का अध्ययन सारी गंभीरता के साथ किया जाए ताकि मनुष्य की शिक्षाओं में मसीह की शिक्षा को न मिलाया जाए। मनुष्यों की शिक्षाएं उपासना को व्यर्थ बना देती है। (मत्ती 15:8-9; 2यू. 1:9)। यदि अपने मनों को हम मसीह की शिक्षा से परिपूर्ण कर लेंगे, तो हम मनुष्यों की शिक्षाओं को उसकी शिक्षा में नहीं मिलाएंगे। हमें अच्छी तरह से बाइबल को पढ़ना चाहिए, और नए नियम की शिक्षाओं को अपने मनों में उतार लेना चाहिए। तभी हम नए नियम की मसीहीयत को सबके सामने पेश कर सकेंगे।

जो नया नियम पढ़ते हैं, वे यह देख सकते हैं कि मसीह ने केवल एक ही कलीसिया को बनाया था (मत्ती 16:18-19)। और यह कलीसिया सम्प्रदायों में बटी हुई नहीं थी। (यू. 17: 20, 21; 1 कु. 1:10-12) कलीसिया को मसीह की देह कहा गया है (इफि. 1:22-23)। सब लोग उस एक कलीसिया में आकर एक देह की तरह हो जाते हैं (इफि. 2:16)। उस एक कलीसिया का चुनाव आदि से किया गया था (इफि. 3:10-11 तथा 3:21)। हमें आत्मिक एकता को कायम रखने का प्रयत्न करना चाहिए, और उसके लिये सात बातें आवश्यक है और ये सातों एक ही एक है। जैसे कि एक ही देह अर्थात कलीसिया है (इफि. 4:3-6)। हमारा विवाह मसीह के साथ हुआ है (रो. 7:4)। उसकी कलीसिया उसकी एक पवित्र दुल्हन के समान है (इफि. 5:22-27)। सो जिस कलीसिया के बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं उसी के बारे में सब लोगों को बताएं। हमें बाइबल की शिक्षाओं से अच्छी तरह से परिचित हो जाना

चाहिए, ताकि हम बाइबल की शिक्षा और मनुष्यों की शिक्षाओं में भेद करना जान सकें। बाइबल से देखें कि आरंभ में मसीह की कलीसिया क्या कहलाती थी, कैसे आराधना करती थी, कैसे संगठित थी, इत्यादि, और फिर ऐसे ही लोगों को सिखाएं।

कुछ प्रचारक साम्प्रदायिक कलीसियाओं के लोगों की प्रशंसा प्राप्त करने के लिये उनकी शिक्षाओं के साथ समझौता कर लेते हैं। पूर्व काल के कुछ भविष्यवक्ताओं की तरह वे "शांति, शांति" कह रहे हैं, जबकि ऐसा है ही नहीं। जब उन्होंने यिर्मयाह के समय में ऐसा किया था, तो उसने उनसे कहा था कि "पूछो कि प्राचीन-काल का अच्छा मार्ग कौन सा है, उसी में चलो" (यिर्म. 6:14-16)। वास्तविक मसीहीयत के बारे में सही तरह से जानने के लिए गंभीरता के साथ अध्ययन करने की आवश्यकता है। और फिर हियाव की जरूरत है ताकि उसके बारे में वैसे ही लोगों को बताया जाए। मनुष्यों की प्रशंसा पाने से परमेश्वर की इच्छा पर चलना अधिक अच्छा है।

सच्ची मसीहीयत में न केवल सही शिक्षा, पर सही चाल-चलन की भी आवश्यकता है। (1 तीमु. 4:16; कुलु. 3:1-14; 2 यू. 9-11) हमें भाइयों को यह भी सिखाने की आवश्यकता है कि वे ऐसा जीवन निर्वाह करें जिससे परमेश्वर की प्रशंसा हो, और सब लोगों पर उसका अच्छा प्रभाव पड़े। हमें मसीह की सारी शिक्षा सिखाकर लोगों से उस पर चलने को कहना चाहिए। पौलुस ने कहा था, "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं, और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।" (कुलु. 1:27-28)। ऐसा ही हमें भी करना चाहिए।

कई बार कलीसिया में कई लोग ढोंगी हाते हैं?

रॉयस फ्रैड्रिक

क्या कलीसिया में ढोंगी लोग हैं? हां ऐसा संभव है। कई लोग ऐसी गलतियां करते हैं जो लोगों को पता रहती हैं परन्तु वे लोग ऐसा दिखाते हैं, जैसे उन्होंने कोई गलती नहीं की है तथा अपने को दूसरों के सामने बड़ा धार्मिक तथा पवित्र बनकर दिखाते हैं। आराधना में शायद वे दिखाये कि वे बहुत अच्छे मसीही हैं परन्तु अराधना के बाद उनका व्यवहार बड़ा अलग सा होता है।

पहिली शताब्दी के मसीहीयों को भी ढोंगी लोगों का सामना करना पड़ता था। प्रेरित पतरस ने मसीहीयों से कहा था, "इसलिये सब प्रकार का बैरभाव और छल और कपट और डाह और बदनामी को दूर करके। नये जन्मे हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो" (1 पतरस 2:1-2) बाइबल में हम एक पति-पत्नी के विषय में पढ़ते हैं जो अपने को धार्मिक दिखाते थे परन्तु बड़े ही स्वार्थी थे। उनका नाम था हनन्याह और सफीरा (प्रेरितों 5:1-11)। जब उन्होंने झूठ बोला वे उसी समय परमेश्वर द्वारा दण्डित किये गये। यदि आज परमेश्वर इस प्रकार से दण्ड दे तो हम में से कितने बच पाएंगे? इससे हमें पता चलता है कि परमेश्वर हमारे मनों को जानता है। प्रत्येक मसीही कोई न कोई पाप करता है परन्तु जो अपने पाप को छिपाता है वह ढोंगी

होता है। (मत्ती 7:5; 23:28)।

कई लोग कहते हैं कि मैं चर्च का सदस्य नहीं बनुंगा, क्योंकि इसमें बहुत से लोग दिखावा करते हैं। परन्तु क्या प्रभु की आज्ञा को तोड़ने का यह उचित कारण हैं? क्या कभी आपने किसी को यह कहते सुना हैं कि मैं अब पैसे का इस्तेमाल नहीं करूंगा क्योंकि कई बार इसमें जाली नोट आ जाते हैं।

क्या सब लोग जो ढोंगी हैं, कलीसिया में हैं? क्या बाहर नहीं हैं? कलीसिया में न आने का बहाना बनाते हुए हम कहते हैं कि मैं उसकी वजह से नहीं आऊंगा।

क्या हम यह बहाना बनाकर आराधना में नहीं आयेंगे कि कलीसिया में ढोंगी लोग हैं?

अपने को नम्र कीजिये। दिखावा छोड़ दीजिये। सच्चे मन से प्रभु के पास आये।

आप कौन सा जूता पहनते हैं?

किसी ने कहा है, "यदि जूते का साईज़ सही है तो पहन लो।" हम में से प्रत्येक शायद नीचे दिये गये साईज़ का जूता पहनते हैं:

लोफ़र शूज– "हे दुष्ट और आलसी दास" इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल में दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा" (मत्ती 25:26; 30)। एक मसीही परिश्रमी होता है। "प्रयत्न करने में आलसी न हो" (रोमियों 12:11)।

ऊंची हील– यह उस व्यक्ति को दिखाता है जो अभिमानी, घमण्ड से भरा हुआ है। "जैसा समझना चाहिए; उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे" (रोमियों 12:3)।

साईज से बड़े शूज– जब समय बुरा होता है तब यह लोग बड़े धार्मिक तथा दुआ-बन्दगी वाले बन जाते हैं। वे चाहते हैं कि लोग उनके लिये दुआ करें तथा उन्हें देखने आयें।

घर के अन्दर पहने जाने वाले शूज– इस प्रकार के लोग चाहते हैं कि सब कुछ ठीक से चलता रहे। कलीसिया के बड़े कामों में यह लोग भाग लेने से डरते हैं। कोई यदि उनसे सहायता मांगे तो वह डर जाते हैं तथा उससे कतराने लगते हैं तथा सब कुछ अपने ही लिये करना चाहते हैं। खराब मौसम में ऐसे लोग घर में ही रहना चाहते थे तथा अराधना में जाने से डरते हैं। आमोस भविष्यवक्ता ने कहा था, "हाय उन पर जो सिय्योन में सुख से रहते हैं" (आमोस 7:1)।

सैन्डल– इस प्रकार के मसीही ढांचे की तरह होते हैं। एक ढांचा जिसमें सिर्फ हड्डियां होती हैं। परमेश्वर की सेवा करने में ऐसे लोग आगे नहीं आते। मसीही जीवन में आगे बढ़ने के लिये प्रेरित पतरस कहता है। "इसलिये सब प्रकार का बैर भाव और छल कपट और डाह और बदनामी को दूर करके। नये जन्मे हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ।"। (1 पतरस 2:1-2)।

सन्डे शूज– यह जूते केवल सन्डे को ही पहने जाते हैं। यानि ऐसे मसीही जो केवल सन्डे या एतवार को ही महत्व देते हैं। पूरे सप्ताह वे मसीही जीवन नहीं जीते।

सन्डे को बड़े धार्मिक बन जाते हैं। यीशु ने कहा था, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपे से इंकार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।" (लूका 9:23)।

काम करने वाले शूज– यह उस प्रकार के मसीही हैं जो प्रभु के कामों में हमेशा लगे रहते हैं। यीशु ने कहा था, "जिसने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है: वह रात आने वाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता।" (यूहन्ना 9:4)।

अब इसमें से कौन सा जूता आपको फिट आता है?

उत्तम गुरु

टॉम कैल्टिन

यीशु का मुख्य काम सिखाना था। सुसमाचार के संदेश को बताना आरंभ करने के लिए मनुष्य का पुत्र जितने भी ढंगों का इस्तेमाल करना चुन सकता था उनमें उसने गुरु होने का ढंग चुना। यह सच है कि वह एक सुसमाचार प्रचारक यानी इवैंजलिस्ट था। और मसीह को एक चंगाई देने वाले और आश्चर्यकर्मों के करने वाले के रूप में जाना जाता था। बेशक वह एक अनूठा प्रचारक था। परन्तु बाइबल के प्रमाण पर ध्यान देने से पता चलता है है कि यीशु के जीवन और काम का सबसे दूरगामी प्रभाव उसकी शिक्षा के द्वारा आया।

यीशु के जीवन और सेवकाई के वचन के विवरण में आराधनालय में लोगों के बीच, मंदिर में, और खुले आकाश में "सिखाने के पल" दर्ज हैं। असल में सुसमाचार के विवरणों में यीशु को किसी भी अन्य शीर्षक से बढ़कर ब्यालीस बार "गुरु" कहा गया है। फिर सैंतालीस बार उसे "सिखाते" हुए बताया गया है। मसीह अपने आपको गुरु ही मानता था। इस नाम से बुलाए जाने पर उसने कभी ऐतराज नहीं किया, बेशक और नाम भी जिनके द्वारा बुलाए जाने पर उसने और उसके मानने वालों ने मना किया और उनका इस्तेमाल करने की आलोचना की। वह जहां भी गया, यीशु ने "स्वामी" को पुकारे जाने का उत्तर दिया।

उससे असहमत होने वालों ने भी मसीह की पहचान उत्तम गुरु और रब्बी के रूप में मानी। फरीसी और सदूकी भी जो यीशु का विरोध करते थे उसे "गुरु" ही कहते थे।

यीशु के गुरु होने का शायद सबसे बड़ा प्रमाण उसके साथ चलने वाले उसके चेले थे। चेले जिसका मूल अर्थ "सीखने वाले" है, वे लोगों के उस समूह को कहा गया है जिन्होंने यीशु में न केवल जबर्दस्त योग्यता वाले वक्ता को देखा बल्कि धार्मिक जीवन के आदर्श को भी देखा। एक गुरु के रूप में यीशु मसीह ने इन लोगों के सामने केवल अपनी बातें ही नहीं बल्कि अपने जीवन को खोल दिया था। किसी गुरु की सफलता या असफलता इस बात से नापी जाती थी कि उसके चेले कहां तक पहुंच पाते हैं। बेशक चेलों द्वारा दी गई मसीह की शिक्षा उसे अब तक का सबसे बड़ा गुरु

बना देती हैं विश्वासी हों या अविश्वासी, बाद की पीड़ियां इस बात से सहमत हुई है। इतिहासकार फ्रैड्रिक मेयर का दावा है कि "सैक्सिक इतिहास पर यीशु का प्रभाव जबर्दस्त है। उसकी छाप को कभी मिटाया नहीं जा सकता।" इनसाइकलोपीडिया जुडेकर इस बात से सहमत है, "बहुत से लोग जो इस बात से सहमत नहीं भी है वे मानते हैं कि वह एक बड़ा और बुद्धिमान गुरु है। उसने संभवतया मनुष्य को अन्य किसी भी व्यक्ति को अधिक प्रभावित किया है।" मसीही शिक्षा की चुनौती के लिए आज मसीह से बेहतर मॉडल नहीं है। "उसने रात को यीशु के पास आकर उससे कहा, 'हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है, क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता।" (यूहन्ना 3:2)।

नास्तिक उसे मानने से इंकार करता है जिसे शैतान भी मान लेता है

डिल डिलोन

बाइबल कहती है, "...दुष्ट आत्मा भी विश्वास रखते और थरथराते हैं" (याकूब 2:19), पर नास्तिक यहां तक नहीं पहुंच पाता। वह विश्वास ही नहीं करता। इस अविश्वास की बुनियाद क्या है? कइयों का कहना होता है :

1. "मेरा परमेश्वर में विश्वास नहीं है क्योंकि मैं उसे देख नहीं सकता।" परन्तु हम और बातों पर तो जिन्हें हम देख नहीं सकते, विश्वास कर लेते हैं, जैसे प्रेम, घृणा, बिजली इत्यादि।

2. परमेश्वर के अस्तित्व को वैज्ञानिकों के द्वारा साबित नहीं किया जा सकता। शायद वैज्ञानिकों के पास इतनी बड़ी प्रयोगशाला और ट्यूब ही नहीं है। परमेश्वर को हमारे अपने विचारों से नापने तक सीमित न करें। यहोवा कहता है, "....तूने समझ लिया कि परमेश्वर बिल्कुल मेरे समान है।...." (भजन 50:21)

3. "मैं नहीं समझ सकता कि परमेश्वर कैसा होगा।" परन्तु जो व्यक्ति केवल उसी पर विश्वास करता है जिसे वह समझ सकता है, तो उसका दिमाग बहुत बड़ा है या बहुत ही छोटा। परमेश्वर ने बाइबल में हमें साफ साफ बताया है कि हमें उसके बारे में क्या जानना आवश्यक है और हमारी क्या क्या जिम्मेदारियां है (प्रेरितों 27:22-31. 22:16; रोमियों 12)। संसार से एक अपील जो हमें परमेश्वर के प्रमाण को देखने में सहायता करती है। क्या बिना कलाकार के कला का कोई काम हो सकता है? क्या बिना डिजाइनर के कोई डिजाइन हो सकता है? क्या बिना कारण के कोई फल हो सकता है? परमेश्वर की समझ और सामर्थ को प्रकृति में इस ढंग से दिखाया गया है कि केवल "मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर है ही नहीं। ...." (भजन 14:1)। जिस प्रकार से प्रत्येक घर का बनाने वाला कोई न कोई जरूर होता है उसी प्रकार से संसार का बनाने वाला भी है (इब्रानियों 3:4)।

ढिठाई से परमेश्वर के अस्तित्व का इंकार कर देने से उसके वजूद पर कोई फर्क

नहीं पड़ता। हमारा परमेश्वर जीवता परमेश्वर है। (इब्रानियों 10:31)।

क्या उत्पत्ति 1 अध्याय में बताए गए दिन 24 घण्टे के दिन ही थे?

ग्लेन कोली

सृष्टि के सुन्दर विवरण को विकासवाद की परमेश्वर की निंदा करने वाली कुछ शिक्षाओं से मिलाने के प्रयास से कुछ लोगों ने तर्क दिया कि उत्पत्ति अध्याय 1 वाले सृष्टि के दिन आज के हमारे 24 घण्टे के दिन नहीं थे। उनका दावा होता है कि वे दिन लम्बे और मायावी थे। हाल ही में किसी ने मुझे यह दिखाने के लिए कि उत्पत्ति वाले दिन कम से कम एक एक हजार वर्ष के थे, यह ध्यान दिलाया कि "प्रभु के यहां एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर है" (2 पतरस 3:8)। मेरा मानना है कि यह विचार बाइबल की गुणवत्ता के बिना है।

तीन कारणों पर विचार करें कि मैं क्या मानता हूं कि उत्पत्ति 1 अध्याय वाले दिन 24 घण्टे के दिन ही थे।

1. यह पवित्र शास्त्र के अन्य वचन आमतौर पर सृष्टि के दिनों से स्पष्ट 24 घण्टों से मिलते हैं।

निर्गमन 20:8-11 "तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना; परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्राम दिन है। उस में न तो तू किसी भांति का काम काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परवेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो। क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में है, सब को बनाया और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया।"

निर्गमन 31:16-17 "सो इस्राएली विश्रामदिन को माना करें, वरन पीढ़ी-पीढ़ी में उसको सदा की वाचा का विषय जानकर माना करें। वह मेरे और इस्राएलियों के बीच सदा एक चिन्ह रहेगा, क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी को बनाया और सातवें दिन विश्राम करके अपना जी ठण्डा किया।"

यदि परमेश्वर ने "दिन" अर्थात एक हजार या अधिक "दिन" को एक हजार या अधिक वर्ष को 24 घण्टे वाले "दिन" के अर्थ से मिला रहा होता तो इन दोनों के बीच किसी अंतर का उल्लेख क्यों नहीं है?

2. क्योंकि बाइबल 24 घण्टे वाले सृष्टि के दिनों की परिभाषा इन शब्दों में देती है, "सांझ हुई, फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहला दिन (दूसरा दिन, तीसरा दिन आदि) हो गया...." (उत्पत्ति 1:5, 8, 13)।

इसका मतलब यह हुआ कि इस्तेमाल किया गया अंक इस बात को दिखाता है कि दिन इसी प्रकार का था। फ्रीड-हार्डमैन यूनिवर्सिटी के लैक्चरों में एलन हायर्स ने यह समझाते हुए इसी प्वाइंट को उठाया था, "हम उन वर्षों के बारे में बताने के लिए

जब वह छोटा था, कह सकते हैं, "मेरे दादा के समय में....। परन्तु यदि हम कहें, मेरे दादा के पहलेदिन में... या मेरे दादा के दूसरे दिन में.... तो हमारे कहने का अर्थ 24 घण्टे ही होगा।"

यह तथ्य कि इल्हाम प्राप्त मूसा ने इतनी बार दोहराया (छह के छह दिनों को गिना और उनके साथ यह शब्द जोड़े, "सांझ हुई फिर भोर हुआ") यह संकेत देता हुआ लगता है कि प्रभु को उम्मीद थी कि दिन की इस लम्बाई पर सवाल उठेंगे।

3. क्योंकि हजारों वर्षों से अधिक खींच लेने पर परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति को मानने के लिए यह असंगत बात है, परन्तु उसी चमत्कारी शक्ति का इंकार करना जब छह दिनों में सृष्टि के पूरा होने की बात कही गई। यदि उसके पास हमारे संसार को समय की किसी भी लम्बाई में लाने की शक्ति है तो हम उसकी बात को मानकर ही क्यों नहीं मान सकते कि उसने इसे 24 घण्टे वाले छह दिनों में ही बनाया? हम वचन को मानने वाले लोग बनें।

यीशु मसीह के नमूने में पूरी नैतिकता पाई जाती है

कोलमैन के. आलमंड

इस प्रकार के विषय के साथ अपने सिरों को रेत में छुपाने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि आज हमारे समाज की हर समस्या के केन्द्र में मनुष्य के दिन की समस्या पाई जाती है। बाइबल वाले दिन का संबंध मन, समझ, भावनाओं और मनुष्य की इच्छा से है।

सुनें कि दिल के संबंध में वचन क्या कहता है, "जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है" (नीतिवचन 23:7); सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है (नीतिवचन 4:23)। "...जो मन में भरा है वही मुंह पर आता है" (मत्ती 12:34); "मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है, उसमें असाध्य रोग लगा है" (यिर्मयाह 17:9)। इन और अन्य कई वचनों के कारण हमारे प्रभु यीशु मसीह ने कहा, "क्योंकि बुरे विचार, हत्या, परस्त्रीगमन, क्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती है। ये ही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती है, परन्तु हाथ बिना धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता" (मत्ती 15:19, 20)।

इसलिए हमारे बोलचाल और हमारे काम तय करते हैं कि हम नैतिक रूप में सही हैं या गलत। गलत हमेशा गलत ही होता है और गलत काम करने का कोई सही तरीका नहीं है।

नैतिकता का संबंध व्यवहार या जीने के ढंग (जीवन शैली) के सही और गलत के नियमों से है। वैबस्टर का कहना है कि नैतिकता का अर्थ एक शिक्षा या आचार विचार का एक सिस्टम है... विशेषकर नैतिक नियमों या आचरण के नियमों का। आइए

नैतिकता के सिस्टम पर जो यीशु मसीह ने मानवीय परिवार को दिया विचार करते हैं कि वह क्या है। यीशु ने कभी पाप नहीं किया इसलिए वह सिद्ध नमूना है (1 पतरस 2:21-25)।

मसीह के नैतिक सिस्टम की खूबियां या विशेषताएं पवित्र शास्त्र में विशेष रूप से बताई गई हैं। मनुष्य कोई ऐसी आचार संहिता नहीं दे सकता जो हर युग की सब जातियों के सब की सब आवश्यकताओं को पूरा कर सके (यिर्मयाह 10:23)। मानवीय इतिहास में दूर दूर तक यीशु मसीह के बताए नैतिक नियम के कोई आसपास भी नहीं है। जॉन लॉक ने सही कहा है , "किसी को असली नैतिकता का पूर्ण ज्ञान देने के लिए मैं उसे नये नियम को छोड़ कोई और किताब नहीं भेजूंगा।"

मसीह का नैतिक सिस्टम भी हम सब को मसीह और उसके स्वर्गीय पिता को जैसा बनने के लिए बुलाता है। महान प्रेरित पौलुस हमें मसीह की नकल करने की चुनौती देता है (1 कुरिन्थियों 11:1)। उसकी नैतिकता भक्ति, पवित्रता और शुद्धता के लिए बुलाती है (तीतुस 2:12; 1 पतरस 1:15, 16, 1 यूहन्ना 3:3; मत्ती 5:8)। परमेश्वर की संतान, उसके स्वरूप और उसके समानता में बनाए होने के कारण, हम एक ही जगह से आए हैं, एक जैसी समस्याओं का सामना करते हैं और एक जैसा ही अंत होगा जिसमें हम सब का एक ही मानक के द्वारा न्याय किया जाएगा। तो इसका अर्थ यह हुआ कि उसकी नैतिकता सब के लिए और सदा के लिए है।

मसीह की नैतिकता का नियम दो बड़े बुनियादी नियमों पर आधारित है- (1) "परमेश्वर से प्रेम करो" और (2) "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखो" (लूका 10:27)। यह नैतिकता मुझे लगता है कि केवल मुझ पर ही जोर नहीं देती बल्कि यह भी जोर देती है कि मेरा आचरण दूसरों को कैसे प्रभावित कर सकता है। जो कुछ हम करते हैं यह उससे मनुष्य जाति से परमेश्वर की महिमा करवाता है और न्याय के एक अंतिम दिन की घोषणा करता है जब सब गलतियां सुधार दी जाएंगी, जब इस जीवन में जो कुछ बोया है वह सब काटा जाएगा (गलातियों 6:7; 2 कुरिन्थियों 5:10) और अंतिम प्रतिफल दिए जाएंगे।

यीशु मसीह का नैतिक नियम समय की परीक्षा में स्थिर रहा है। हर जाति और पद के लोगों ने इसकी शान की तारीफ की है। मनुष्य जाति और देशों के सुधार और उन्हें ऊंचा उठाने के लिए कोई और नियम इसकी शक्ति के बराबर का नहीं है। यह उतना ही प्रासंगिक आज भी है जितना पहली बार दिए जाने के समय था क्योंकि यह मनुष्यों की ओर से नहीं, स्वर्ग की ओर से दिया गया है। इसका स्वर्ग से होना इसके देने वाले के असीम ज्ञान वाला होना, पूरी तरह से धर्म, सही और भला होने को दिखाता है। इसलिए हम एल, ओ सैंडरसन के लिखे गीत को खुशी से गा सकते हैं कि "इलाही किताब कितनी कीमती है, जो इल्हाम से दी गई है। इसके नियम दीये की तरह चमकते हैं, मेरी रूह को स्वर्ग में ले जाने के लिए। पवित्र इलाही पुस्तक। मेरा कीमती खजाना। मेरे कदमों के लिए दीपक और मेरे राह की रोशनी, मुझे सुरक्षित घर पहुंचाने वाला।

आराधना कहां करनी चाहिए?

जैरी बेट्स

पुरुष हों या स्त्रियां वे सब शुरू से आराधना में परिवार तक पहुंच करते रहे हैं। बिल्कुल आरंभ में ही हम कैन और हाबिल के परमेश्वर के पास भेंट लाने को देखते हैं (उत्पत्ति 4:15)। हम पढ़ते हैं कि भेंट चाहे दोनों लेकर आए थे परन्तु परमेश्वर ने केवल हाबिल के बलिदान को ही स्वीकार किया था। पुरखाओं के युग के दौरान प्रत्येक परिवार आराधना में परमेश्वर के सामने अपने-अपने बलिदान लेकर आता है। जब सीने पहाड़ पर परमेश्वर ने इस्राएल की संतान के साथ वाचा बांधी तो उसने स्पष्ट कर दिया कि हर आराधना, याजकों के द्वारा जो कि लेवी के गोत्र के थे, तम्बू में ही होनी चाहिए। बाद में शाऊल राजा से राज्य के आरंभ की स्थापना के साथ अस्थायी तम्बू की जगह यरूशलेम में मन्दिर बना दिया गया था। इस प्रकार उसके बाद आराधना यरूशलेम में ही होती थी। परन्तु मसीह द्वरा स्थापित वाचा के अधीन आराधना कहीं पर भी की जा सकती है। यूहन्ना 4 अध्याय में यीशु के सामरियों के कुएं पर महिला से बात करते हुए उस महिला ने पूछा था कि आराधना करने का सही स्थान कौन सा है। उसके पूर्वजों का कहना था कि सामरिया ही सही जगह है जबकि यहूदियों का दावा था कि आराधना की सही जगह यरूशलेम है। "यीशु ने उससे कहा, हे नारी, मेरी बात का विश्वास कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता की आराधना करोगे, न यरूशलेम में" (यूहन्ना 4:21)। अन्य शब्दों में, हम आराधना किस जगह करते हैं इसका कोई महत्व नहीं है। हम परमेश्वर के लोग जो कि दुनिया भर में हर जाति में से है, परमेश्वर की आराधना, जिस भी देश में रहते हैं, वहीं पर कर सकते हैं।

आराधना कब करनी चाहिए?

मूसा की व्यवस्था के काल के दौरान इस्राएलियों को सब्त के दिन आराधना करने की आज्ञा दी गई थी। "तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना; परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उसमें न तो तू किसी भांति का काम काज करना और न तेरा बेटा, तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो। क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी, और समुद्र और जो कुछ उन में है, सब को बनाया और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्राम दिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया" (निर्गमन 20:8-11)। यह वाचा केवल इस्राएलियों को दी गई थी। बाद में मूसा ने लिखा, "हमारे परमेश्वर यहोवा ने तो होरेब पर हम से वाचा बांधी। इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं, हम ही से बांधा जो यहां आज के दिन जीवित है" (व्यवस्थाविवरण 5:2-3)। यह वाचा जिसमें सब्त के दिन को मानना शामिल था केवल इस्राएलियों और उसकी संतान के साथ बांधी गई थी न कि अन्य जातियों या उनके पूर्वजों के साथ।

यीशु ने इस वाचा को अपने क्रूस पर कीलों से जड़ दिया। "और विधियों का वह

लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला और उस क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है" (कुलुस्सियों 2:14)। रोमियों 7 में पौलुस ने समझाया कि हम व्यवस्था के लिए मर गए ताकि किसी दूसरे (यानी मसीह) के साथ विवाह कर सकें। फिर आयत 7 में उसने साफ-साफ "लालच मत कर" वाली आज्ञा को उन आज्ञाओं में से एक बताया जिसके लिए हम मर गए थे। यह उन्हीं दस आज्ञाओं में से एक है (निर्गमन 20:17)। यदि कोई दस आज्ञाओं में से एक आज्ञा के लिए मर गया, तो उसके लिए सब आज्ञाओं के लिए मरना आवश्यक है। इसलिए अब हमें सब्त के दिन को आराधना करने की आज्ञा नहीं दी गई है।

नई वाचा के अधीन हम देखते हैं कि हमें सप्ताह के पहले दिन आराधना करना आवश्यक है। आरंभ कलीसिया शुरू से सप्ताह के पहले दिन आराधना करती थी। पौलुस त्रोआस की कलीसिया के साथ सप्ताह के पहले दिन ही मिला था (प्रेरितों 20:7)। बेशक वह नगर में सात दिन तक रहा था, जो कि इस बात का संकेत है कि पौलुस को सुनने जाने के लिए यह विशेष प्रार्थना सभा नहीं थी बल्कि यह आराधना का सामान्य और प्रचलित दिन था। वे "रोटी तोड़ने के लिए इक्ट्ठे हुए" (यानी प्रभु-भोज में भाग लेने के लिए, न कि पौलुस से वचन सुनने के लिए) वह सब्त के दिन वहां था परन्तु वह उनसे सप्ताह के पहले दिन आराधना में मिला। पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया को सप्ताह के पहले दिन चंदा इक्ट्ठा करने की आज्ञा दी (1 कुरिन्थियों 16:2), जो कि फिर से इस बात का संकेत है कि यह आराधना का प्रचलित दिन था।

यह केवल स्वाभाविक है कि आरंभिक कलीसिया सप्ताह के पहले दिन आराधना करती थी क्योंकि कलीसिया की स्थापना के लिए होने वाली सब महत्वपूर्ण बातें सप्ताह के पहले दिन ही हुई थी। यीशु मुर्दों में से सप्ताह के पहले दिन जी उठा था। स्त्रियां सुबह-सुबह खाली कब्र पर सप्ताह के पहले दिन ही आई थी (लूका 24:1)। कब्र बेशक खाली थी पर झलकते वस्त्र पहने दो पुरुषों ने (24:4) उन्हें यीशु के शब्द याद दिलाए थे कि "अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए, और क्रूस पर चढ़ाया जाए और तीसरे दिन जी उठे" (लूका 24:7)। यीशु को शुक्रवार के दिन क्रूस पर चढ़ाया गया था इसलिए समय की यहूदियों की गणना के ढंग के अनुसार जिसमें वे दिन के किसी भी भाग की गणना पूरे दिन के रूप में करते थे, तीसरा दिन रविवार ही होना था, उसी दिन, दो जन इम्माऊस नामक एक गांव को जा रहे थे (लूका 24:13), जब यीशु ने उन्हें दर्शन दिया था पर वे पहचान नहीं पाए थे कि वह कौन है। बातचीत के दौरान ये लोग कहने लगे, "परन्तु हमें आशा थी कि यही इस्राएल को छुटकारा देगा। इन सब बातों के सिवाय इस घटना को हुए तीसरा दिन है" (लूका 24:21)। इस प्रकार हम देखते हैं कि मसीही लोगों को मालूम था कि मसीह ने भविष्यवाणी की हुई थी कि वह सप्ताह के पहले दिन जी उठेगा।

यीशु सप्ताह के पहले दिन अपने चेलों से मिला (यूहन्ना 20:19), परन्तु तब थोमा वहां नहीं था। आठ दिन बाद, पहले दिन (20:26), यीशु फिर से अपने चेलों के सामने प्रकट हुआ इस बार थोमा भी उनके साथ था। कलीसिया पिन्तेकुस्त के दिन बनी, जो कि सप्ताह के पहले दिन ही आता था (लैव्यव्यवस्था 23:15-16)। प्रेरितों

पर पवित्र आत्मा इसी दिन उतरा था और यशायाह 2:2-4 की भविष्यवाणी के पूरा होने की बात पहले सुसमाचार संदेश में इसी दिन दी गई। इसी दिन 3,000 लोगों ने बपतिस्मा लिया था और इस प्रकार कलीसिया स्थापित हुई थी (प्रेरितों 2:41)। उसके बाद से हम कलीसिया के सप्ताह के पहले दिन आराधना करने की बात ही पढ़ते हैं, बेशक आरंभ में मसीह लोग सब यहूदी थे, जो सब्त के दिन आराधना किया करते थे।

प्रचार करना या सिखाना

हमारी आराधना का एक महत्वपूर्ण भाग परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना होता है। पर प्रचलित रूप में एक व्यक्ति परमेश्वर के वचन में से सरमन या उपदेश देता है। परन्तु परमेश्वर के वचन का इक्ट्ठे अध्ययन करने का यही एक तरीका नहीं है। महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर का वचन सिखाया जाए ताकि कलीसिया उन्नति कर सके। बहुत सी आयतें परमेश्वर के वचन की शिक्षा पर जोर देती है। पौलुस त्रोआस की कलीसिया को आधी रात तक वचन सुनाता रहा (प्रेरितों 20:7)। "इसलिए मैं ने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है, और वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश करता हूं" (1 कुरिन्थियों 4:17)। "परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा, उसे और उसके प्रगट होने और राज्य की सुधि दिलाकर मैं तुझे चिताता हूं कि तू वचन को प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डांट और समझा" (2 तीमुथियुस 4:1-2)।

परमेश्वर ने उद्धार दिलाने वाले अपने सुसमाचार को फैलाने के लिए प्रचार के माध्यम को चुना। "क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे" (1 कुरिन्थियों 1:21)। पौलुस ने कहा कि उसने ठाना है कि मसीही लोगों के बीच यीशु मसीह वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जाने (1 कुरिन्थियों 2:2)। और उसने उसका प्रचार मानवीय ज्ञान की लुभाने वाली बातों से नहीं किया (1 कुरिन्थियों 2:4)। 1 कुरिन्थियों 14 में पौलुस भविष्यवाणी और भाषाओं के दानों के गलत इस्तेमाल को ठीक करने के लिए लिख रहा था। महत्वपूर्ण उद्देश्य यह था कि कलीसिया उन्नति करें (1 कुरिन्थियों 14:4-5), जो केवल तभी हो सकता था जब लोग उसे, जो कहा गया था समझें। आयत 26 में पौलुस के निष्कर्ष पर ध्यान दें, "सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए।" आत्मिक उन्नति केवल परमेश्वर के वचन को समझने से हो सकती है, सो आराधना सभा में प्रचार करने या परमेश्वर के वचन को सुनने पर दिए जाने वाले महत्व को देखा जा सकता है।

प्रचार करना या सिखाना आराधना का महत्वपूर्ण भाग है। प्रचार करना मनोरंजन का रूप नहीं है या किसी के अपने बोलने की कला में माहिर होने को दिखाना नहीं है। प्रचार करना आराधना करने वाले को परमेश्वर को देखने और सुनने के योग्य बना देता है। सीखाने वाले का काम अपने सुनने वालों के लिए परमेश्वर से संदेश लेना होता है। प्रचार करने से व्यक्ति अपने जीवन में व्यक्तिगत रूप में वचन को लागू कर सकता

है। प्रचार करना व्यक्ति को परमेश्वर को देखने, अपने आपको देखने और परमेश्वर के वचन के प्रकाश में अपने उद्देश्य को देखने के योग्य बना देता है। हमें यह याद रखना आवश्यक है कि प्रचार करना केवल प्रचार करने के लिए विशेष प्रशिक्षण पाए हुए किसी व्यक्ति तक सीमित नहीं है। बेशक बाइबल की शिक्षा आवश्यक है और यह बड़ी सहायक है पर प्रचार कोई भी कर सकता है। यदि किसी में संजीदगी से अध्ययन करने की योग्यता और अपने आपको तैयार करने की इच्छा हो तो उसे प्रचार करने देना चाहिए, चाहे उसने खुद पढ़कर ही क्यों न सीखा हो। प्रचार करना "कलर्जी यानी पादरी" तक सीमित नहीं है। यह विचार मनुष्य ने खोजा है न कि बाइबल ने बताया है।

क्या स्त्री उपदेश दे सकती है?

बैटी बर्टन चोट

यदि प्रश्न यह है कि "क्या स्त्री मिले-जुले वयस्क लोगों की सभा में उपदेश दे सकती है"? तो उत्तर होगा, "नहीं।" 1 कुरिन्थियों 14:34-35 तथा 1 तीमुथियुस 2:12-14 में वचन स्त्री को कलीसिया की सभा में पुरुषों पर आज्ञा देने से रोकता है। "मैं कहता हूं कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे" (1 कुरिन्थियों 14:35)।

"उपदेश करने" से अभिप्राय है मण्डली में भाषण देना। हम सभी अपने सामान्य जीवन में प्रतिदिन कुछ न कुछ उपदेश देते हैं।

हम अपने व्यवहार तथा दूसरों के साथ अपने संबंधों के द्वारा भी उपदेश देते हैं। युवा प्रचारक तीतुस को पौलुस ने लिखा कि स्त्रियां अपने व्यवहार में समझदार और पवित्र हो, ताकि "परमेश्वर के वचन की निंदा न होने पाए" (तीतुस 2:5)। तीमुथियुस को उसने जवान विधवाओं के लिए निर्देश दिए कि उनके चाल-चलन ऐसे हो जिससे "किसी विरोधी को बदनाम करने का असर न" मिले (1 तीमुथियुस 5:14)। इन निर्देशों से स्पष्ट होता है कि हम सब अपने जीवन का नमूना देकर, अच्छी शिक्षा देकर या फिर परमेश्वर के वचन या उसके लोगों के लिए बदनामी या निंदा का कारण बनकर उपदेश देते हैं।

विचार करने वाली बात

इस संसार में हम अकेले नहीं रहते हैं। जो कुछ भी हम करते हैं उसे दूसरे लोग देखते हैं और उन पर इसका कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है। अपने आपको "मसीह जैसा" कहलाकर उसके जैसा जीवन न बिताकर हम लोगों को मसीहियत से दूर कर रहे होते हैं। रोमियों 2:14 की यह भविष्यवाणी ठीक बैठती है, "क्योंकि तुम्हारे कारण अन्य जातियों में परमेश्वर के नाम की निंदा की जाती है।"

स्त्रियां प्रतिदिन अपने घर की चारदीवारी में उपदेश देती रहती हैं। यह जानते हुए कि मसीह स्त्रियों के विवाह अविश्वासी पुरुषों के साथ हुए थे, पतरस ने निर्देश दिया: "हे पत्नियों, तुम भी अपने पति के अधीन रहो। इसलिए कि यदि इन में से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हो, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर बिना वचन के

अपनी-अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खिंच जाएं" (1 पतरस 3:1, 2)।

जहां कहीं केवल पत्नी ही मसीही है, परन्तु पति नहीं, तो वहां पति के उद्धार की उम्मीद उसकी पत्नी के विश्वसी होने के कारण है। यदि पत्नी अपने मसीही जीवन के संबंध में दुविधा में है, अराधना में कभी-कभी जाती है और अपनी आत्मिक उन्नति के लिए या दूसरों को सिखाने की उसे परवाह नहीं है तो वह अपने पति के लिए रूकावट का कारण बन सकती है। उसका अपना व्यवहार भी अपने पति को सुसमाचार की सच्चाई को मानने से रोक सकता है। परन्तु यदि वह स्नेहपूर्वक और आदरपूर्वक इस बात पर जोर दे कि उसके जीवन में पहल परमेश्वर को मिलनी चाहिए तो उसका पति और उसके परिवार के अन्य लोग भी उसके धार्मिक व्यवहार से सीख लेंगे।

विचार करने वाली बात

एक बुजुर्ग दम्पत्ति की कहानी है। दोनों मसीही नहीं थे। पति रौबदार था जबकि पत्नी विनम्र और शालीन स्वभाव की थी। उसने सच्चाई को जानकर सुसमाचार का आज्ञापालन करना चाहा। पति उस पर भड़क गया कि अगर उसने बपतिस्मा लिया तो वह उसे तलाक दे देगा। साथ ही उसने वादा भी किया कि वह स्वयं कभी बपतिस्मा नहीं लेगा।

अन्त में पत्नी ने अपने पति के बजाय परमेश्वर की आज्ञा मानने की हिम्मत जुटा ली। पहले पहल बहुत ही-हल्ला और शोरशराबा करने के बावजूद साल के अन्दर-अन्दर पति का कठोर मन भी पिघल गया और वह मसीही बन गया। सच में, उसकी एकमात्रा आशा अपनी पत्नी में थी। यदि वह हिम्मत जुटाकर अपने विश्वास की बात न मानती तो उसके पति को आज्ञा मानने वाला कोमल मन न मिलता।

घरों में जो शिक्षा बच्चों को दी जाती है, उसमें से अधिकतर शिक्षा स्त्रियों की ओर से होती है। युवा प्रचारक तीमुथियुस के विषय में हम पढ़ते हैं, "और मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहिले तेरी नानी लोईस और तेरी माता यूनीके में थी, और मुझे निश्चय है, कि तुझ में भी है" (2 तीमुथियुस:15) तीमुथियुस का पिता एक अन्य जाति था, उसे पुराने नियम के पवित्र शास्त्र वाला विश्वास नहीं था, जो मसीह पर विश्वास करने का आधार है। तीमुथियुस की माता और नानी ने उसे परमेश्वर के वचन की सच्चाई बड़ी सावधानी से वचन में ही दे दी थी।

परमेश्वर के वचन में स्त्रियों के सिखाने के उदाहरण मिलते हैं जिन से पता चलता है कि वे हर समय अपने व्यवहार के द्वारा और घर में सिखाने के लिए स्वतंत्र थी। परन्तु क्या स्त्री उन्हें भी सिखा सकती है, जो उसके परिवार के लोग न हो?

प्रेरितों 18:2, 25, 26 में हम अक्विल्ला नामक एक आदमी और उसकी पत्नी प्रिसिकिल्ला के बारे में पढ़ते हैं। वे यहूदी पृष्ठभूमि वाले लोग थे और तम्बू बनाने का काम करते थे और कुरिन्थुस में रहते थे। जब पौलुस कुरिन्थुस में गया था तो वह उन्हीं के पास रूका था। प्रिसकिल्ला और अक्विल्ला पहले ही मसीही बन चुके थे या उन्हें पौलुस मसीह में लेकर आया था, इस पर वचन कुछ नहीं कहता। परन्तु जब पौलुस कुरिन्थुस से गया वो यह दम्पत्ति इफिसुस तक उसके साथ था। वहां उन्हें अपुललोस नामक एक यहूदी मिला जो, "विद्वान पुरुष और पवित्र शास्त्र को अच्छी तरह से जानता था" (आयत 24)। "पर प्रिसकिल्ला और अक्विल्ला उसे अपने यहां ले गए और उसे परमेश्वर का मार्ग और भी ठीक-ठीक बताया" (आयत 26)। वचन से पता चलता है कि अपुल्लोस को सिखाने में

अक्विल्ला की पत्नी ने साझा प्रयास किया था। निश्चय ही यह सिखाना कलीसिया के सभास्थल में या आराधनालय में नहीं हुआ होगा। बल्कि वे उसे अपने यहां ले गए और घर में उसे अकेले में समझाया। कई जगहों पर घरों में बाइबल की बात करने के मामले मिलते हैं, जहां सिखाने में योगदान देना स्त्री के लिए अच्छा है। इस परिस्थिति में उसका व्यवहार और आचरण बिल्कुल एक मसीही व्यक्ति वाला यानी प्रेमपूर्वक और विनम्रता वाला होना आवश्यक है। ऐसा नहीं होना चाहिए कि वह ऐसे जताएं कि जैसे वह "सब कुछ जानती है" और न ही क्रोध से भरी हो।

आज के युग में जब बहुत सी पुस्तकें छपी हुई मिली जाती हैं तो कई बार यह प्रश्न खड़ा होता है कि "क्या पुरुष के लिए किसी स्त्री की लिखी पुस्तक या लेख को पढ़ना गलत बात है?" यह भी घर में एक व्यक्तिगत अध्ययन के जैसा ही है, अन्तर केवल इतना है कि इसमें लिखे शब्द मुंह के द्वारा बोलने के बजाय छपे हुए होते हैं। इसमें मण्डली में प्रचार करने जैसी कोई बात नहीं है क्योंकि पुरुष को यह स्वतंत्रता है कि वह इन बातों को चाहे तो पढ़ें और चाहे तो न, फिर जिस स्त्री के लेख को वह पढ़ रहा है उसका उस पर कोई दबाव नहीं होगा कि वह उसकी अगुआई को माने।

क्या स्त्रियां किसी अवसर पर मण्डली में उपदेश दे सकती हैं? बूढ़ी स्त्रियों के लिए पौलुस ने तीतुस को निर्देश दिए कि "वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि वे अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें और संयमी, पतिव्रता और घर का कारोबार करने वाली, भली और अपने-अपने पति के अधीन रहने वाली हो..." (तीतुस 2:3-5)। सो इस बात की केवल अनुमति ही नहीं बल्कि आज्ञा है कि स्त्रियां अन्य स्त्रियों को और बच्चों को सिखाएं। ऐसा व्यक्तिगत रूप में घरों में, मण्डली में, छोटे समूहों में, बड़े समूहों में, सेमिनारों में और 'वर्कशापों में' कहीं भी हो सकता है, जहां पुरुष न हों।

यह भी हो सकता है कि कहीं छोटी मण्डलियां हो जिनमें केवल स्त्रियां ही हों। ऐसी परिस्थिति में क्या किया जाए? क्या उन्हें आराधना करना इसलिए छोड़ देना चाहिए, क्योंकि अगुआई करने के लिए उनमें कोई पुरुष नहीं है? नहीं; यदि मण्डली के सभी सदस्य स्त्रियां हैं तो जब तक वहां कोई पुरुष मसीही नहीं है तब तक आराधना करवाने की जिम्मेदारी उन्हीं की होगी।

सो प्रश्न यह नहीं है कि "क्या स्त्री उपदेश दे सकती है?"

बल्कि प्रश्न फिर से नेतृत्व की भूमिका का है। पुरुषों की सभा में स्त्री को उपदेश देने की आज्ञा नहीं है। मिली-जुली सभा में जिसमें पुरुष और स्त्रियां दोनों हो, वहां उपदेश देने के साथ-साथ आराधना की अन्य गतिविधियों में हर बात में अगुआई का काम पुरुषों का है। यह उन्हें परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेदारी है, और जब वे उस काम को स्त्रियों के हाथ में दे देते हैं, चाहे वे कितनी भी "गुणी" क्यों न हो, तो वे परमेश्वर ही की आज्ञा को तोड़ रहे होते हैं।

बच्चों, अन्य स्त्रियों, अविश्वासियों को उपदेश देने का काम सचमुच में बड़ा है और इसके लिए समय चाहिए। यदि स्त्रियां इस काम को बखूबी करती हैं तो बहुत से लोग अनन्तकाल में परमेश्वर के साथ रह रहे होंगे जो ऐसा न होने की स्थिति में नाश हो जाते हैं। हमें इस बहस को छोड़कर कि वे क्या नहीं कर सकती, यह ध्यान देना चाहिए कि वे क्या कर सकती है। ✞